

HISTORICAL BACKGROUND OF TEMPLE

OF JUKHALA

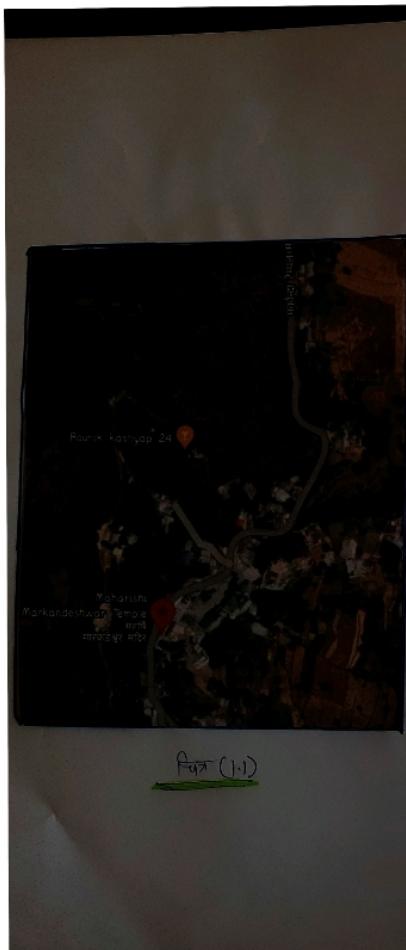
PROJECT SUBMITTED BY SOURABH
CLASS ROLL NO - 2025

HPU ROLL NO. - 1210440078

GOVERNMENT COLLEGE JUKHALA
BILASPUR HP.

SESSION 2023-24

PROJECT SUBMITTED TO SUDAMA RAM
ASSOCIATE PROFESSOR
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY



Location :-

⇒ National Highway (NH) से दूरी :

बैंसा की विहार (१.१) में दग्धाली गांव है कि नियमित
मार्केटेल मार्केट की दूरी ग्रामोड - बॉक (NH) से
करीब ०.५ mi = ०.८५२ km की दूरी पर है, जो
वहाँ आने वाले भ्रमण के लिए याक्षण
कर्म दूरी बता रहता है। ऐसे लगभग उत्तर-
दक्षिण का रास्ता है, परन्तु ग्रामोड - बॉक
से ५०० मीटर दूरी रुका रास्ता है। परन्तु
जहाँ रुका रास्ता है जो कि वाहनों के
लिए सुधार है। जिसमें वाहनों के आने-जाने
के लिए चुनिदा है। ताकि यहाँ भ्रमण उपरोक्त
दृष्टि साता - दिता को जी भ्रमिष्ठ के दर्शन
करवा सकें। जो कि ऐसेल आना नहीं कर पाते।
मार्केटेल मार्केट की ओर के ऊपरांक पर
जी देख सकते हैं जिसमें ऐसा सब लगाला
जा सकता है। कि मार्केटेल की फिर्मती
होगा है उसके उल्लंग और से मार्केटेल
आने का एक्स्प्रेस रेजिस्ट्री पास्ते वा जो पता चल
दाता है।

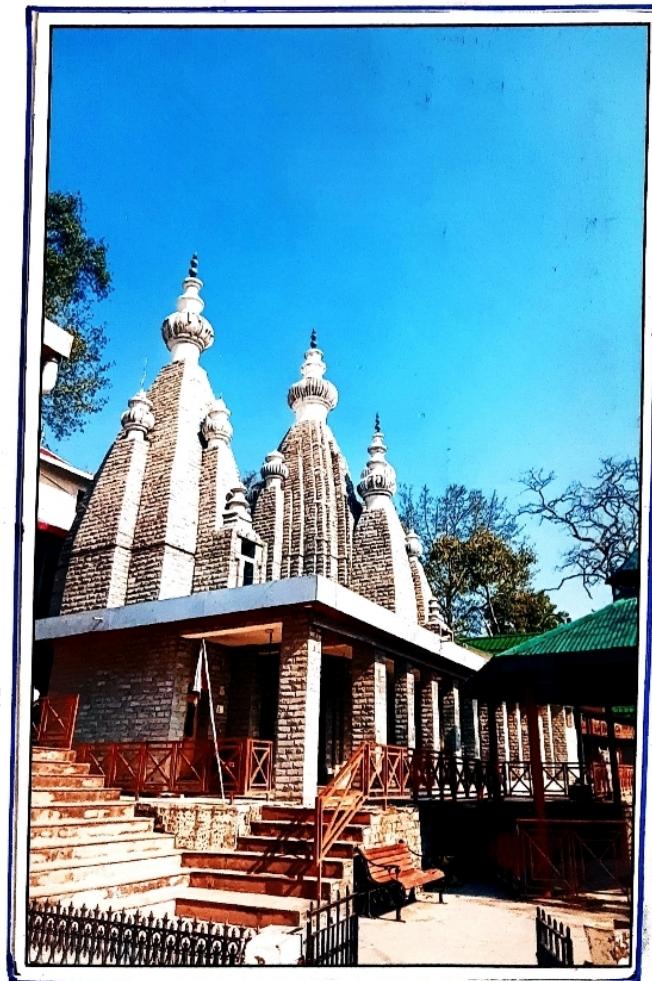
मार्किप्टेज अखिल कला :-

एक दोसरीं बात के उपरांत अखिल मार्किप्टेज कुंड
इस छोड़े जे एक शिवि अपनी पत्नी के साथ
बच्चा पैदा करने जे असंभव हो। उन्होंने
कई बर्बाद तक जगवान छिव से प्रारंभित की
अखिल की जिमित से खुश होकर उन्हे जगवान
छिव के लड़के का आठवीं वर्ष दिला। जिसे
अखिल ने नाम दिला मार्किप्टेज। लेकिन जगवान
छिव ने अह जी कहा कि जब उसका लड़का
12 साल का हो जाएगा तो वह भी जाएगा।
अखिल इस बात को लेकर चिंतित हो। उन्होंने
उसे हर दिन गहरी दर रहता हो कि वो एक
दिन अपने बच्चे को रख देगा।

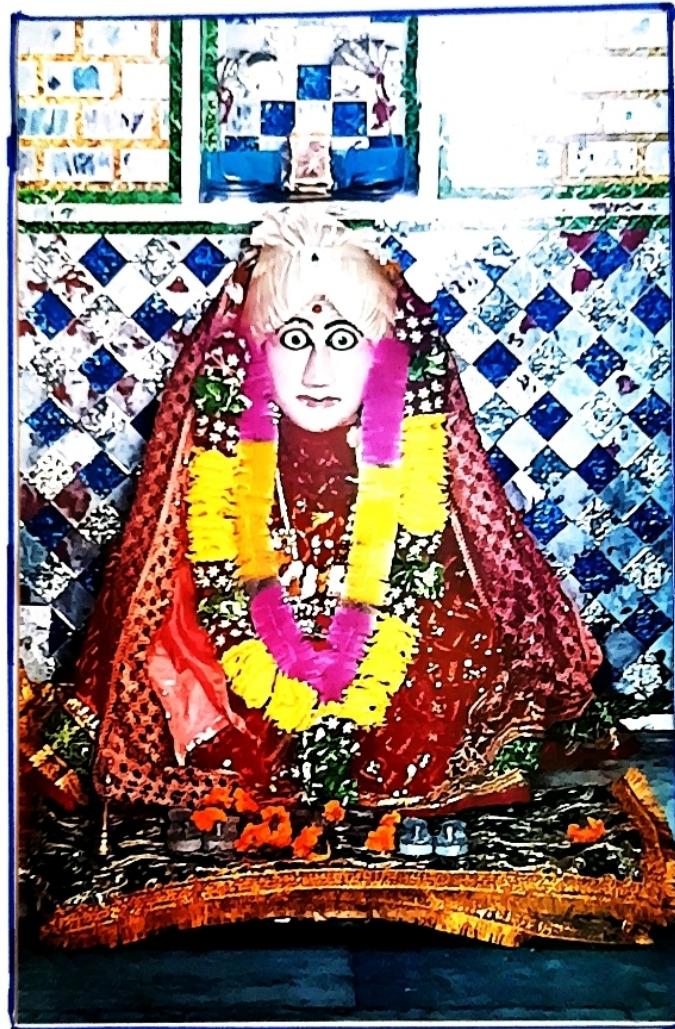
जब मार्किप्टेज बोडा बड़ा हुआ और सब कुछ
एकमेंसने लगा तो उसने उपरे पिता से पूछा
कि आप इतने चिंतित हो हो। एव्वयाई
बानी के बाद मार्किप्टेज ने जगवान छिव
से प्रारंभित की। जब जगवान छिव मार्किप्टेज
के सामने आए तो वह लौटायी का देने लगा।
जगवान छिव मार्किप्टेज के ओर समर्पण
से काफी खुश हुआ। उन्हे उन्हे लंबी
आँख का बरदान दिला।

उसी समय उस द्वाम पर परिव्रक्ष झरना बहने
लगा। उस झरने को घार लाग आता को
मुहूर्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

इसमें पहले जब अमराज जी मार्केट को 12 वर्ष
भूख होने के बाद सबको को भैं आए औ
जो मार्केट जी छागवान छिकित्सा की मुद्रा से
चिपके गए थे। और छागवान छिक
अमराज जी से अनुरोध किया और मार्केट
जी को लकड़ी आलू का बरदान दिया।



मार्कंडे जी की मूर्ति का चित्र



इस मार्कंडे जी मंदिर की मुख्य मूर्ति है, जिसके छोने करने के लिए श्रावण द्वादश से आते हैं। तबा
ओरी मात्रा में बर्णन के लिए आते हैं। इस
मंदिर में सबसे लोकप्रिय वृग्नीष्मी के समान
सेवे लगाने पर आते हैं।

भक्टों की संख्या :-

इस नगर में हर लाल बैलाकी भेले पर लगाग
भाखों औलानी जाता करने जाते हैं। तब उह
सामने पार जाता जाता करने वाले के लिए
महत्वपूर्ण सामने जाता है।

पठावा :-

इस नगर का वार्षिक पठावा लगागा 10 लाख का
करीब पठाका जाता है। इसका उपयोग मंटीर
की देखरेख के लिए किया जाता है।

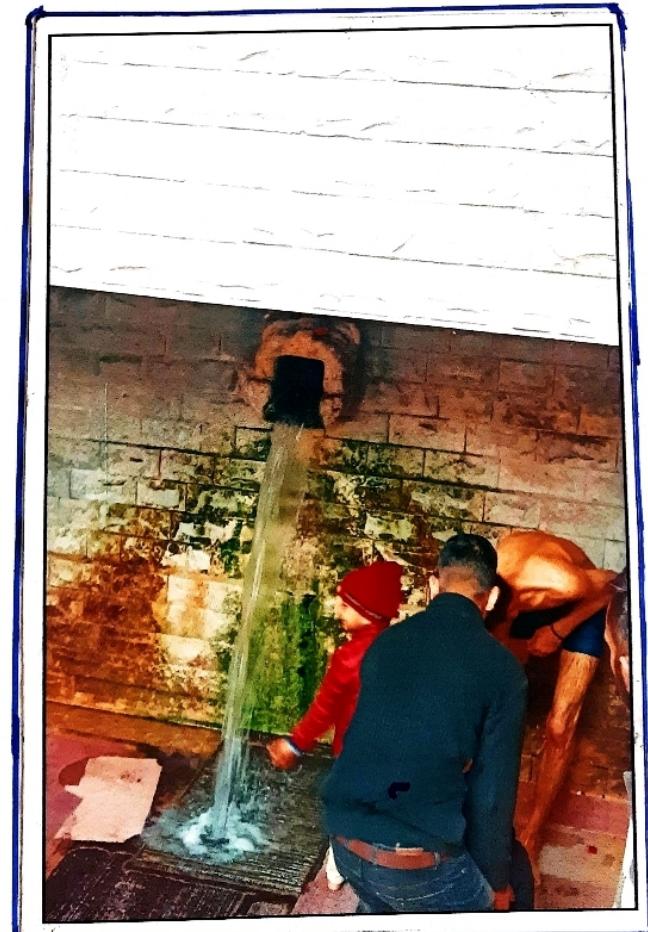
पर्सियन और दर्बनी स्तंभ :-

पर्सियन शृंखि नगर इमारिल प्रदेश के बिलासपुर
शहर से ३० किलोमीटर की दूरी पर स्थित
है आप अगर शहर की जाता पर हैं तो
इसके सामने ही शृंखि शैव जी के एकते हैं।
जोसे गुफा सतलुज नदी के तट पर स्थित है।
जहाँ महाकाळ महाकाश के लोकन शृंखि जोसे
तपस्ना के लिए मिल जाते हैं। उह
गुफा ६१० फीट की ऊँचाई पर स्थित है।
और सतलुज के लोक लिनाह पर स्थित है।
उस गुफाओं की बजह से उस शहर की
पहली जोसपुर जी कहा जाता जा।

पवित्र जल धारा :-

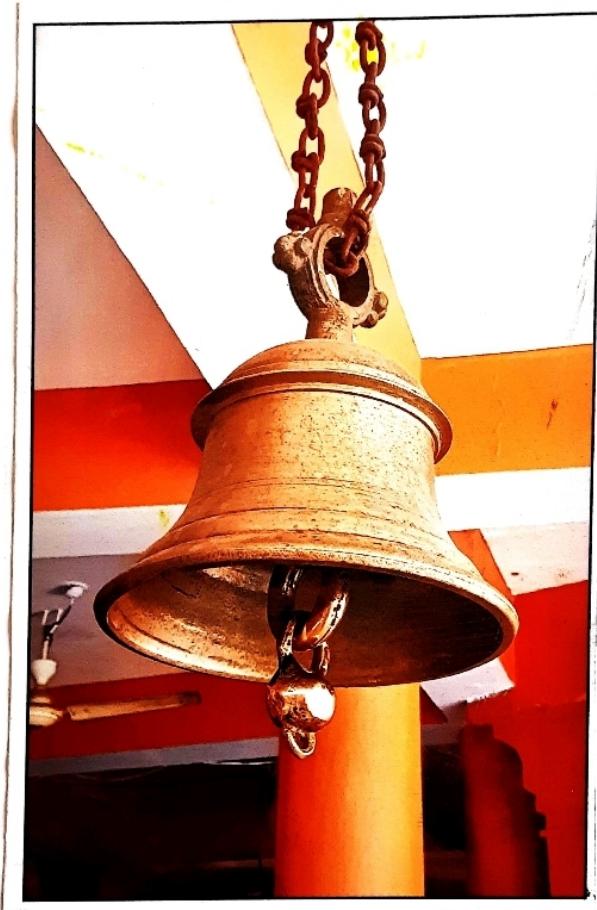
गह मंदिर मे शाक्तिक सूप ए उपन्न जल धारा है।
इस जल से स्नान करने वाले हर भाइ भाई
स्मृति। ज्ञात आते हैं। इस जल से स्नान करने
से अनेक प्रकार के नर्म रोग से बुटकारा
गिरता है तबा लोग इस जल से नहाकर
अपने पापों को छोड़ते हैं।

गह जलधारा मंदिर का प्रमुख धारा है।



घंटी

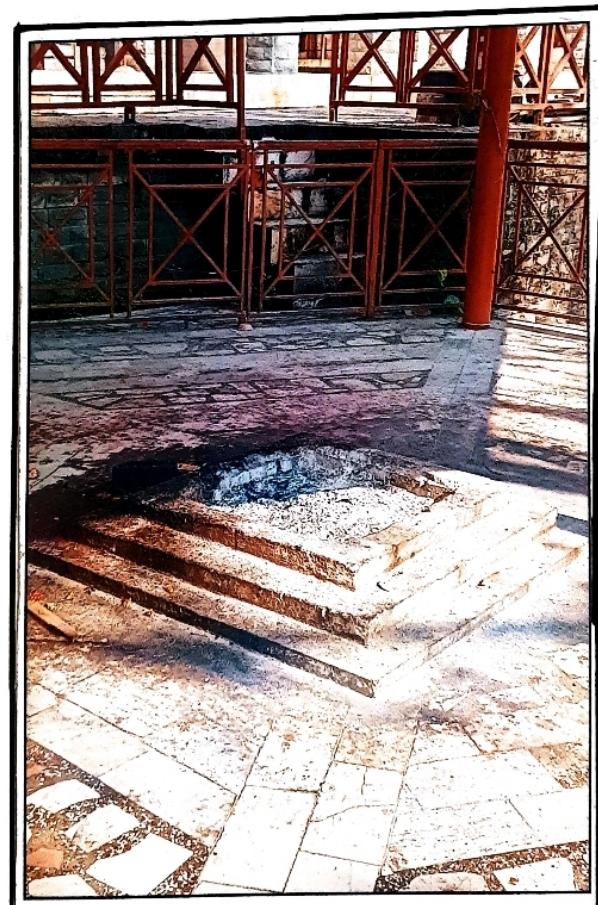
अह मार्गिर द्वालः कापी जागी मे बंदो हुआ है । यह
लिरा लहां घंटी की जाहाजा काफी उचित है ।
अहां घंटी की जाहाजा लगाना ५० के काशीब
होगी । इन घंटी के दर्जन रीति दिवा गाए
पित्र मे हैं ।



अह घंटी मंदिर की सबसे बड़ी घंटी है । तला वस्तवा
बजन लगाना ७० से ३० किलो के कबीले होगा ।
अह मंदिर मे मुख्य मूर्ति के पास लगाई गई है ।

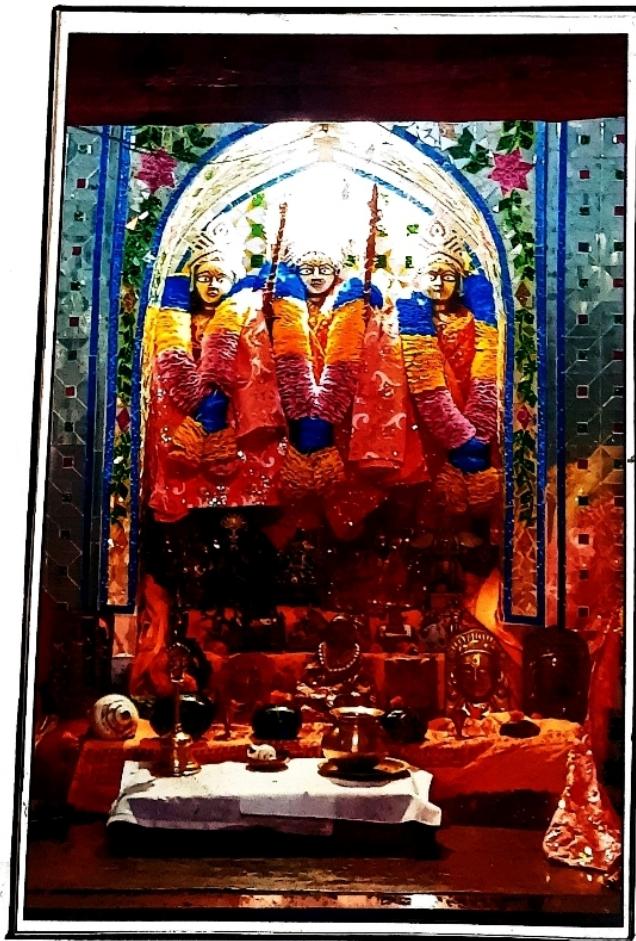
राख — (छन)

गह मारकोट्टा नीदर को प्रबुद्ध रूपान है जहाँ
पुजारी उपनी तपस्या करते हैं। पुजारे हृवन के स्वरूप
मनि-दर की पवित्रता बढ़ाते हैं। लहां पर लालों
की छेंगा में लोग यी आते हैं तो लहां पर
पुजारिलों के द्वारा हृवन क्रिला को पुरी करते
हैं। उन्होंने लोग लहां पर आकर शुद्धिकरण
करते हैं। हृवन क्रिला द्वारा के उपनी कर्मी
को यी शुद्ध करते हैं।



नीना देवी की मूर्ति

एह मूर्ति मार्कोडल मंदिर में स्थापित की गई है। एह मूर्ति मंदिर की छोका बढ़ती है। अहं हजारों लोगों नीना देवी के दर्शन के लिया जाते हैं। और मंदिर की छोका व और बढ़ते हैं। मूर्ति इवारा हर साल अहं हजारों वी आया में छोका अहं पर जाते हैं। मूर्ति की पूजा करते हैं। एह मूर्ति मुख्य मार्कोडल की मूर्ति के दास किनारे में स्थित है।



लक्ष्य और उद्देश्य -

इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य जुखाला छोड़ के स्नानीय दैवी देवताओं के मंदिरों की स्थितिहासिक पूष्ट जगति व जानना तथा उसका सम्बन्ध जानना है।

प्रमुख प्रबिधि -

इस प्रोजेक्ट में हम जुखाला के स्नानीय द्वादश पर विभिन्न लोगों से तथा मंदिर के कार्य कर्ताओं से गिलकर उनके इक्ष्यन पुस्तक अधिकारी के इतिहास के बारे में खानामिक आकड़ों को एकत्रीत किया है।

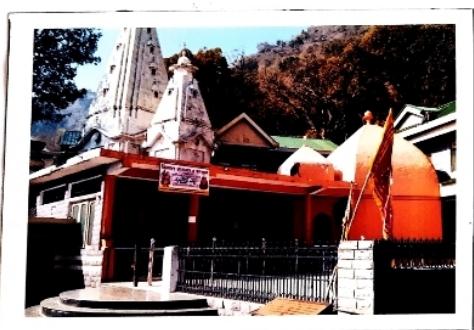
इसके फ़ायदे अतिरिक्त मंदिरों में जाकर बोधे में स्थितिहासिक वस्तुओं को देखा तथा मंदिर कर्मणी के द्वादश सदस्यों के एकत्र बहुमत भी जानकारी प्राप्त की है।

विश्लेषण -

इस प्रोजेक्ट रिपोर्ट को जुखाला छोड़ के मंदिरों की स्थितिहासिक तथा अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए तेजार विषय बना है।

स्थिरास्ति भूमि :-

स्थिर मार्केटों गोदार बहुत प्राचीन है। जानला के अनुशासन लिए जाते हैं कि वे इस गोदार में अच्छी रियल से जानला की गोदा रखते हैं। इस गोदार में जाता है उत्तरी भारतीय जानला के नाम सुनी होती है। बड़ी स्थिर मार्केटों के नाम दिल्ली ने उसे नाम जानला भी ऐसे तपश्चात्मकों जाना जा सकता है।



प्रमुख उत्तर व दौहरा :-

वैष्णवी व शक्तियुक्त मैला इस भूमि के मुख्य उत्तर व दौहरा है। इस धर्म लोकों अधिकारीय शक्तियुक्त भूमि के विविध भूमि जल औ धर्मान्वयन करने जाते हैं। तब इस धर्म लोकों द्वारा धर्मान्वयन करने जाते हैं। इस धर्म के विविध भूमि जल औ धर्मान्वयन करने जाते हैं। इसके अतिरिक्त गोदारों वैष्णवी व शक्तियुक्त मैला जी कहा जाता है। अतिरिक्त गोदारों वैष्णवी व शक्तियुक्त मैला जी कहा जाता है। इस धर्म की शक्तियुक्त मैला जी कहा जाता है।

पुजा अर्चना →

इस गोदार में धिन में दो बार पुजा की जाती है। तब इस पुजा में गोदा के आस-पास के लोग पुजा करने के लिए जाते हैं। पुजा का अवधारणा-

सुबह : 06:00 बजे

शात : 08:00 बजे व मार्हिलों में 01:00 बजे

संघर्ष के खुलने तक बंद होने का समय :-

संघर्षों में सुबह 6 बजे बंद होना 8 बजे शाम को बंद होने में बद्द होता है। बंद होने में शाम 10 बजे तक बंद होने को 9 बजे होता है।

मन्दिर कमीटी

मंदिर के सभी लोगों का संघरण
“प्रधि गांडीज़ नायर कमीटी” के द्वारा

बिला जाता है। OFFICIAL members → Sub-division, Chair man
Deputy Superintendent of police [Bilaspur] Member Tehsil-Sader

निष्कर्ष

इस प्रोजेक्ट ये मेरे अपने आस-पास के मंदिरों
को बहुत गहराई से जाना है।

अंत में मैं इस “Historical Background of
temple of Jukhala” परिलेखन को कहते हूँ।
मेरे जो अनुशासन लिया है। मैं उस उल्लेखों को
आपके आन साहा लगाना चाहता हूँ। मैं यह दिए
गए विषयों के बारे में साची नहीं बातें सीखती।
एवर्यु उच्ची बात, जो कि मौं आपके आन
साहा लगाना चाहता हूँ वह लह है कि मैंने
ज्ञ विषय के में लोगों द्वारा विवादित की।

इस परिलेखन को मुझे 66 अनुग्रह
विषय की वॉस्टरीक लोकार्थी छात्र की है।
ज्ञाने लिया गए मुख्य बात है। मैंने इस
परिलेखन में करने वाले हर एक कार्य का
आनंद लिया।

धन्यवाद।

HISTORICAL BACKGROUND OF TEMPLE'S OF JUKHALA

PROJECT SUBMITTED BY ANISH

CLASS. ROLL. NO. 21134

HPU ROLL.NO. 1210440007

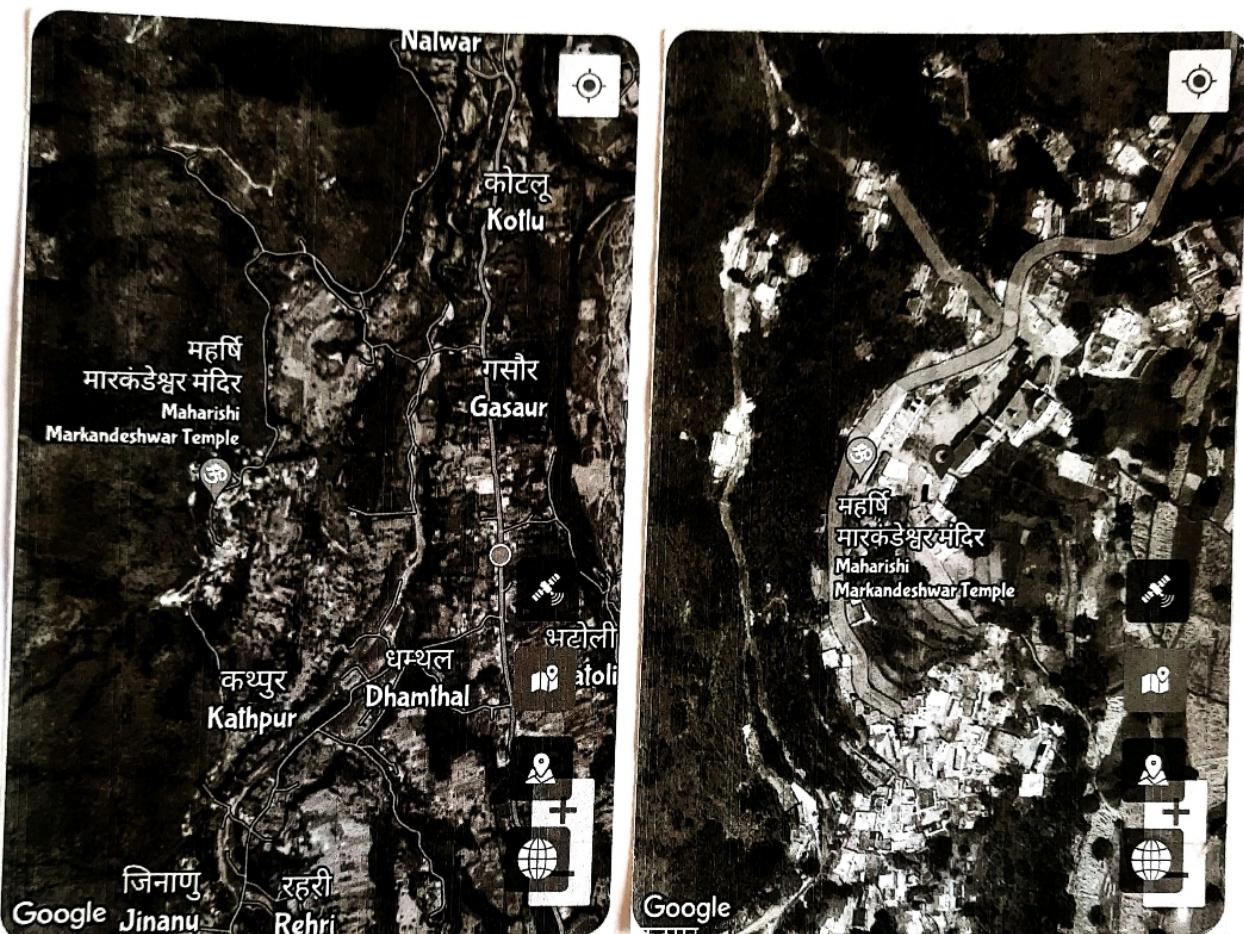
PROJECT SUBMITTED TO PROF.
SUDAMA RAM

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

GOVERNMENT COLLEGE JUKHALA
BILASPUR H.P.

SESSION 2023-2024

★ Location (व) :-
⇒ National Highway (NH) से मंदिर की दूरी -:



- जैसा कि चित्र (1.1) और (1.2) में दर्शाया गया है कि नदियों मारकड़ी और मंदिर की दूरी गोपाल चौक (NH) से करीब 0.5 mil = 0.852 km है।
- जो कि यहां आने-जाने के लिए सबसे कम दूरी वाला रास्ता है, अह एक पैदल आने-जाने का रास्ता है। परन्तु गोपाल चौक से 500 मीटर पूर्व का रास्ता है। जिससे वाहनों के आने-जाने के लिए सुविधा है।
- ताकि सभी भक्त उपर्युक्त माता-पिता की भी मंदिर के दर्शन करवा सकें, जो कि पैदल आता नहीं कर पाते हैं।

• Introduction and location :-

- मार्कंडेय मन्दिर बिलासपुर से २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित
- मार्कंडेय त्रद्विषि की समर्पित धार्मिक स्थल है। इस मन्दिर में अक्षत त्रद्विषि मार्कंडेय की पूजा करने के लिए आते हैं।
- भले ही यह एक धार्मिक स्थल है, लैकिन मन्दिर की सून्दरता भी दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती है। त्रद्विषि मार्कंडेय के पास एक धारना है जिसे छैद्य पवित्र माना जाता है। क्योंकि इसमें औंबद्धीय गुण पाए जाते हैं। मार्कंडेय जी की मूर्ति की भी एक उपनी अलग खासियत है।
- भक्तों का यह भी मानना है कि त्रद्विषि मार्कंडेय उन्हें कई शाश्वतिक विमारियों का छलाज कर सकते हैं। कई निःसंतान दंपति संतान प्राप्ति की उम्मीद में त्रद्विषि मार्कंडेय की पूजा करने के लिए आते हैं। इस लैख में आप मार्कंडेय त्रद्विषि मंदिर की भात्रा से जूड़ी पूरी जानकारी की जानने वाले हैं।

• मार्कंडेय त्रद्विषि कथा :- (Rishi Markandeya Story) :-

- एक पौराणिक कथा के अनुसार त्रद्विषि मृकंडु, इस कीत्र में एक त्रद्विषि अपनी पत्नी के साथ बच्चा पैदा करने में असमर्थ थे। उन्होंने कई वर्षों तक भगवान् शिव से प्रार्थना की, त्रद्विषि की भक्ति से खूबा हीकर उन्हें उन्हें भगवान् शिव ने लड़के का आशीर्वाद दिया। जिसे त्रद्विषि ने नाम दिया मार्कंडेय। लैकिन भगवान् शिव ने यह भी कहा कि जब उसका लड़का १२ साल का हो जाएगा तो वे मर जाएगा। त्रद्विषि इस बात को लैकर चिंतित था। क्योंकि उसे हर दिन अहीं डर रहता था। क्योंकि वो एक दिन अपने बच्चे को खो देगा। जब मार्कंडेय थोड़ा बड़ा हुआ और सब कुछ समझये लगा तो उसने अपने पिता से पूछा कि आप इतने चिंतित क्यों हो? सन्त्वाई जानने के बाद

मार्कोट्य ने भगवान् शिव से प्रार्थना कि जब भगवान् शिव मार्कोट्य के सामने आए तो वह वैसाखी का दिन था। भगवान् शिव मार्कोट्य के और समरण से काफी खुश हुए और उन्हे लम्बी आयु का वरदान किया। उसी समय उस स्थान पर पवित्र झरना बहने लगा। इस झरने को चार धाम भागा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

इससे पहले जब अमराज जी मार्कोट्य को 12 वर्ष पूर्व हीने के बाद स्वर्ग को लैने आए तो मार्कोट्य जी भगवान् शिवलिंग की मूर्ति से चिपक गए थे। और भगवान् शिव ने अमराज जी से अनुरोध किया और मार्कोट्य जी को लम्बी आयु का वरदान दिया।



★ पवित्र जल धारा :-



यह मंदिर में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न जल धारा है।
इस जल से स्नान करने यहाँ हर साल लाखों सैनमी
अथवा भक्त बड़ी दूर-दूर से आते हैं। इस जल से
स्नान करने से अनेक प्रकार के चर्म रोगों से
छुटकारा मिलता है तथा इस जल से नहाकर लौग
अपने पार्थों को भी छीते हैं। मार्कुड़िय मंदिर
तीर्थ स्थानों में पवित्र और स्थान माना जाता है।

★ धंटिया :-

यह मंदिर प्रायः काफी भागों में बंदा हुआ है। इस लिए यहाँ धंटियाँ की संख्या काफी अधिक है। यहाँ धंटियाँ की संख्या लगभग 50 के करीब होती है। इन धंटियाँ के वर्णन नीचे दिए गए चित्र में हैं।

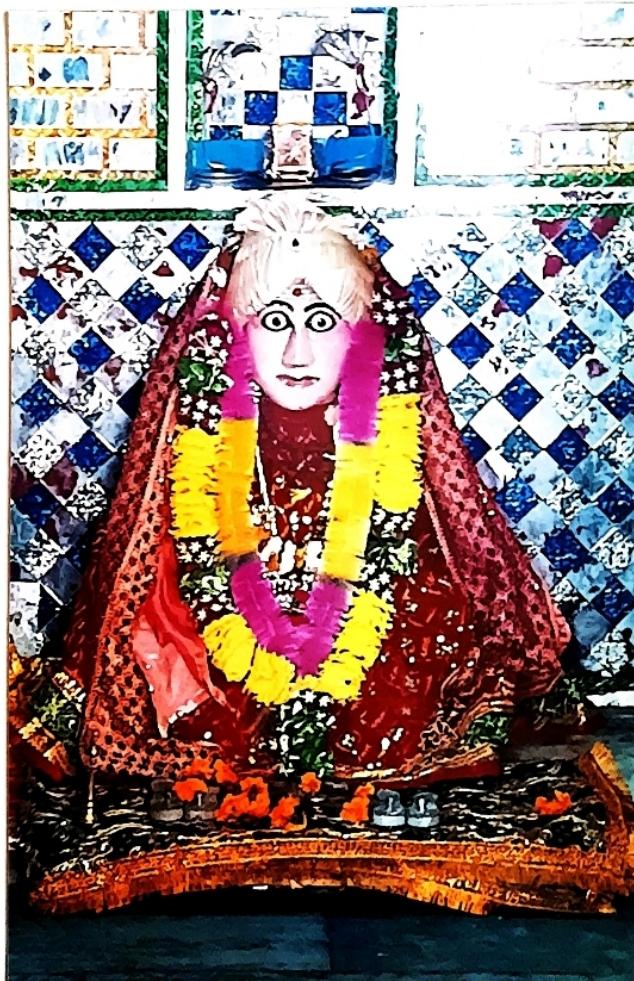
* धंटियाँ का चित्र *



यह धंटि मंदिर की सबसे बड़ी धंटी है तथा इसका वजन लगभग 20 से 30 किलो के करीब होता है। तथा यह मंदिर में मूख्य मूर्ति के पास लगाई गई है।

★ मार्कंडेय जी की मूख्य मूर्ति—:

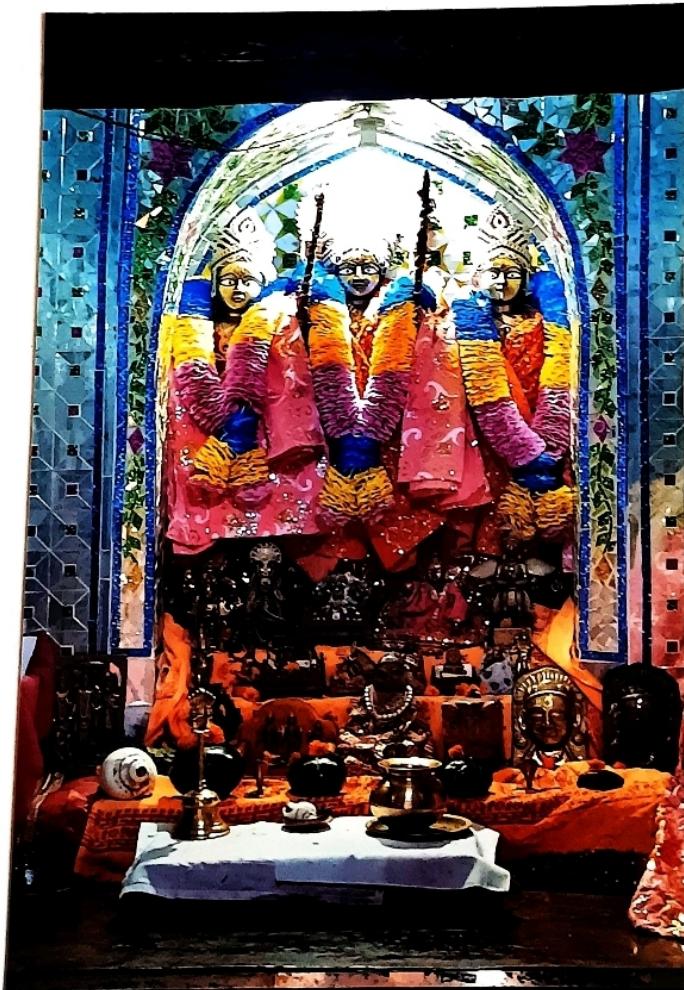
यह मूर्ति ऋषि मार्कंडेय जी की मुख्य मूर्ति है। यहां पर पूजारी (क्षीर राक्षश संख्यान) जी बैठते हैं। वह दशार्कों और वहां पर आने वाले भक्तों की मार्कंडेय जी का आशीर्वाद लेने की अनुमति देते हैं तथा ऋषि मार्कंडेय के बारे में बताते हैं। यह मार्कंडेय जी की मूर्ति करीब 2 फीट होती है। यह मार्कंडेय जी की मूर्ति गहनी से सजाई गई है। जैसा की चित्र में दर्शाया गया है।



[ऋषि मार्कंडेय जी]

★ राम मन्दिर :-

मार्कंडेय मन्दिर के सामने राम मन्दिर का निर्माण किया गया है। इस मन्दिर में राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान जी की मूर्ति बनाई गई है। जो कि अत्यंत सून्दर रूप से बनाया गया है। यहां पर भी दर्शक श्री राम जी की पूजा करने के लिए आते हैं।



[राम मन्दिर]

★ हवन कुंड :-

मार्कंडीय मंदिर में विशाल हवन कुंड का निर्माण किया गया है। अग्नि के द्वारा देवताओं को पहुंचाने वाले सौभ के लिए हवन कुंड का प्रयोग किया जाता है। हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित करने के बाद इस पवित्र अग्नि में फल, शहद, धी, काष्ठ (लकड़ी) आदि पदार्थों की आहुति प्रमुख होती है।



[हवन कुंड]

★ प्रमुख उत्सव व त्योहार :-

वैशाखी व मार्कड मेला इस क्षेत्र के मुख्य उत्सव व त्योहार हैं। इस दिन लोगों और मार्कड़य मंदिर के प्राकृतिक जल से स्नान करने आते हैं। उ अप्रैल से यह मेला शुरू हो जाता है तथा 5-6 दिन चलता है। इस मेले को वैशाखी का मेला भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त मेले में बहुत से देवी-देवता भी इस मेले की अशाँभा को बढ़ाते हैं।

पूजा अर्चना :-

इस मंदिर में दिन में की घार पूजा की जाती है तथा इस मंदिर की पूजा में गांत के आस-पास के लोग पूजा करने के लिए आते हैं। पूजा का समय :-

सुबह - 06:00 बजे
शत - 08:00 बजे व सदियों में 07:00 बजे।

मंदिर के छुलने व बंद होने का समय :-

सदियों में मंदिर सुबह 6 बजे तथा बंद शाम की 8 बजे तथा गर्मियों में मंदिर सुबह 5 बजे एवम् बंद शाम की 9 बजे होता है।

मंदिर कमीटी :-

मंदिर के सभी कार्यों का संचालन “नवधि मार्कड़य मंदिर कमीटी” के द्वारा होता है। official members \Rightarrow Sub division magistrate (Chairman) Deputy Superintendent of police. (Bilaspur) Member, Tehsildar, Sadar Distt language office (Bilaspur) Member Assistant Engineer.

★ नत्य और उद्घाटन -:

इस प्रौजैक्ट का मुख्य उद्देश्य जुखाला क्षेत्र के स्थानीय देवी-देवताओं के मंदिरों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को जानना तथा उसका अध्ययन करना है।

प्रमुख प्रविष्टि -:

इस प्रौजैक्ट में हमें जुखाला के स्थानीय आधार पर विभिन्न लागों से तथा मंदिर के कार्य कर्ताओं से मिलकर उनसे प्रश्न पूछकर मंदिरों के इतिहास के बारे में प्राथमिक आकड़ों को संकलित किया है।

इसके अतिरिक्त मंदिरों में जाकर मंदिर में ऐतिहासिक वस्तुओं को देखा तथा मंदिर कर्मटी के कुछ सदस्यों से इनके संदर्भ में जानकारी प्राप्त की है।

विश्लेषण -:

इस प्रौजैक्ट रिपोर्ट को जुखाला क्षेत्र के मंदिरों की ऐतिहासिक तथा मन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है।

ऐतिहासिक भूमि -:

ऋषि मार्कण्डेय मंदिर बहुत प्राचीन है। मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि जो इस मंदिर में सच्च दिल से सन्तान की मांग रखकर इस मंदिर में आता है उसकी मन्नत अवश्य पूरी होती है। क्योंकि ऋषि मार्कण्डेय के माता-पिता ने उसे शिव भगवान् जी से तपस्या करके मांगा था।

★ जलमण मन्दिर :-

पुराना बिलासपूर जी 1950 के दशक की अंत में जलमण हो गया था। गाद के अतिरिक्त चादर के बावजूद एक और सर्कियां भी के लिए ऊपर उठ जाता है।



[जलमण मन्दिर]

अन्य तीन मन्दिर अच्छी स्थिति में हैं। हांलाकि उनकी दीवारें पर लगे पत्थर जोगाह - २ ढीले ही गए हैं। बीच का मन्दिर अन्य दो मंदिरों की तुलना में बड़ा है। यह मूख्यतः गोविंद सागर झील से जलमण हो गया है। यह मन्दिर इन्द्र शैली से निर्मित है, यह 170 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में फैला हुआ है। जहां आसपास घास के मैदान हैं।

निष्कर्ष

Conclusion इस (Project Report) से मैंने अपने आस-पास के मंदिरों को बहुत गहराई से जाना। अंत में मैं इस (Historical Background of Temples of Jukhala) परियोजना को करते हुए मैंने जी अनुभव लिए हैं। मैं उन्हे अनुभवों को आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। मैंने किए गए विषयों में के बारे में सारी नई बातें सीखी। सबसे अच्छी बात, जो कि मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ कि कि मैंने इस विषय में अधिक ज्ञान विकसित की।

इस परियोजना में मूझे “भूगोल”(Geography) विषय की वास्तविक जानकारी प्रदान की है। हमारे लिए इस तरह के लक्ष्य निर्धारित करने के लिए हमारे अध्यापक जी “सुदामा राम” जी को बहुत विशेष धन्यवाद। मैंने इस परियोजना में करने वाले हर एक कार्य का आनंद लिया।
धन्यवाद।

HISTORICAL BACKGROUND OF TEMPLE'S OF JUKHALA

PROJECT SUBMITTED BY
YAMAN.

CLASS ROLL No. 21150
HPU ROLL No. 1210440082.

PROJECT SUBMITTED To
PROF. SUDAM RAM .

ASSOCIATE PROFESSOR.
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
GOVT. COLLEGE JUKHALA
BILASPUR H.P.

SESSION 2023- 24.

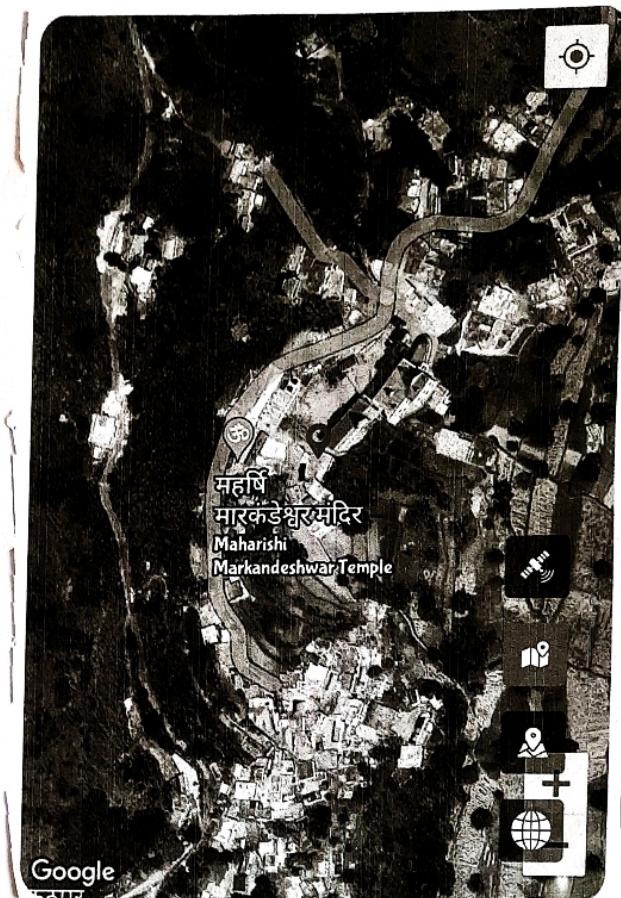
* Location :-

⇒ National Highway (NH) से मंटिर की दूरी :-

(1.1)



(1.2)



जैसा कि तिस (1.1) और (1.2) में दर्शाया गया है कि महर्षि मारकंडेश्वर मंदिर की दूरी गोलीड चौक (NH) से करीब $0.5 \text{ mil} = 0.852 \text{ km}$ है। जो कि यहाँ आने वाले भ्रातों के लिए सहज है इसी बात का ध्यान दें। पहले ऐसा जाने के बाने का ध्यान दें, परन्तु गोलीड चौक से 500 मीटर पीछे एक घस्ता है। जिससे बाटने के जाने-जाने के लिए ज़ुबिया है। ताकि सभी भ्राता अपने शूदे माता-पिता को श्री मंदिर के दर्शन करवा सके। जो कि पैदत यात्रा नहीं कर पाते।

Introduction and Location :-

मार्कण्डे^य मन्दिर विलासकुर से २० किलोमीटर की दूरी पर इष्ट मार्कण्डे^य ऋषि की समर्पित धार्मिक स्थल है। इस मन्दिर में अक्षत ऋषि मार्कण्डे^य की पूजा करने के लिए जाते हैं। और लेही पट एक धार्मिक स्थल है। लेहीन मन्दिर की शुद्धिदत्ता की आवश्यिकता और श्रद्धा पर्वत को जाकर्षित करती है, और भारकुण्ड के पास एक ग्राम है जिसे बैदृ पवित्र ग्राम जाता है। चौरांकि शब्द में जीवितीय ग्रुण पास जाते हैं। मार्कण्डे^य जी की मृति की आवश्यिकता अपनी जन्मगत घासिपत है।

अक्षत का पट ग्राम है जिसकी श्रद्धिमार्कण्डे^य उन्हीं के श्रद्धिमार्कण्डे^य शास्त्रीय विभागीय का दृष्टान्त कर सकते हैं। उन्हीं निःसंतान दृष्टि सतान प्राप्ति की उच्चमीढ़ी में ऋषि मार्कण्डे^य की पूजा करने के लिए जाते हैं। इस लेख में आप मार्कण्डे^य ऋषि मन्दिर की यात्रा से जुड़ी दृष्टि जानकारी को जानने गए हैं।

मार्कण्डे^य ऋषि कथा :- Rishi Markandya story

एक पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि मृकुड़ इस द्वीप में एक ऋषि अपनी पत्नी के साथ वैद्या वैदा करने में असमर्पि थे। उन्होंने कई बार तक अगवान शिव से प्रार्थना की ऋषि की श्रमित से छुट्टा होकर उन्हें अगवान शिव ने उन्हें का साक्षीवाद दिया, जिसे ऋषि के नाम दिया मार्कण्डे^य, लेहीन अगवान शिव ने पट और कटा कि जब उसका लड़का दूसरा द्वीप जाएगा तो वे मर जाएंगा।

एष इस बात को लेकर चिह्नित था। यहींकि उसे
दूर दिन पहरी तर छहता था कि वे एक दिन जपने
कर्म को छोड़ देगा।

जब मार्क्झिय वौडा वहाँ दूसा जौरे से खड़ समझने
लगा तो उसने जपने पिता से पूछा कि आप इतने
चिह्नित क्यों हो। सच्चाई जानने के बाद मार्क्झिय
ने अगवान शिव से प्राप्ति की, जब अगवान शिव
मार्क्झिय के सामने आए तो वह मैसाली का दिन था,
अगवान शिव मार्क्झिय के सौर समरण से काफी
खुश दूर। जौरे रहने वाली माझ का बदला भिला।
उसी समय उस स्थान पर परिष मरना बहुमत लगा,
इस मरने को चार घाम यात्रा का महत्वपूर्ण छिला
मरना जाता है।

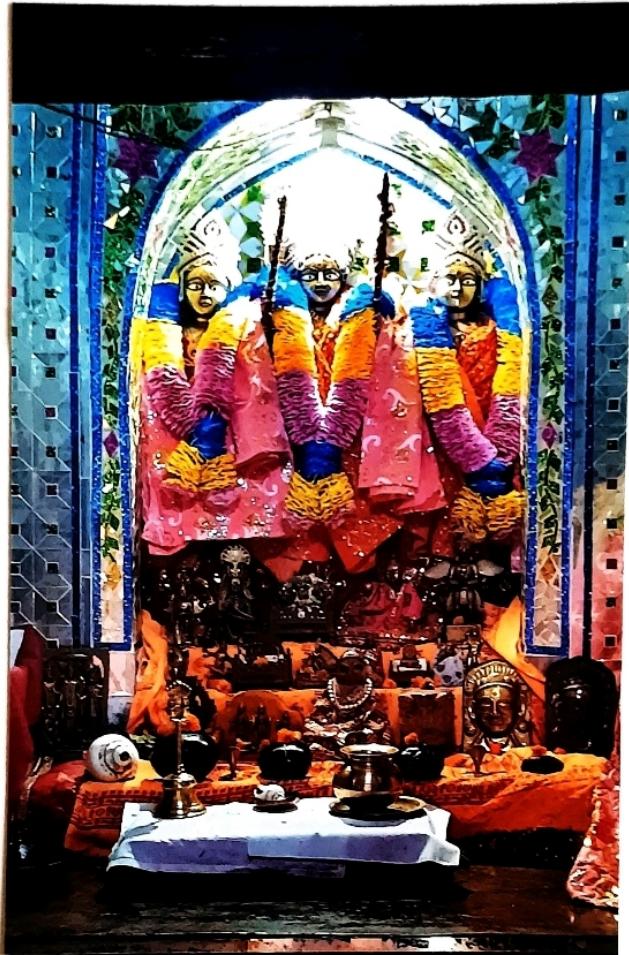
इससे पहले जब यमराज की मार्क्झिय अगवान को
12वर्ष पूर्व दौड़ी के बाद ल्लवर्ग की तेजे आँख
तो मार्क्झिय जी अगवान शिवतिंग की मृति से
चिपक गए थे। और अगवान शिव ने यमराज की क्षे
मनुषीय किसी जौरे मार्क्झिय की की लरवी आँख
का बदला दिया।

प्रकृति - ।



यह चित्र मारुपूर्ण भगवन के बाहर का चित्र
दर्शाया गया है। मंदिर में जाने के लिए दो प्रवेश
द्वार हैं। मारुपूर्ण के भगवन के मारबत का
पत्थर लगाया गया है। मारुपूर्ण भगवन के ऊपर भी
मारबत के पत्थर से छोटे छोड़ा गया है। मंदिर के
पांच स्तर वरी पदार्थी है। इस के नीचे स्तरी
भवन बूढ़ता दुजा भवन है। इस पदार्थी
के ऊपर बूढ़ला छाट है।

श्री राम मंदिर



यह जो चित्र है। श्री राम अगवान का है। यह मंदिर
मारकण्डे अगवान के साथ ही स्थित है। यह
मंदिर श्री बहुत छुन्दर बनाया गया है। इसमें अगवान
श्री राम के साथ सिंहा प्रता, लक्षण अगवान और
जैरी के अगवान दर्शन है। यह सब दृश्यकों के
बहुत छुन्दर लगता है। यह प्रातः ही लकड़ी पहल
इला राम माँ के ही के जाती है।

पवित्र जल धारा



यह मण्डिर में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न जल छारा है।
इस जल से स्नान करने पर हुए वात लाखों लीलानी/
अकल आते हैं। इस जल से स्नान करने से अनेक
प्रकार के चर्म रोगों से हुटकारा मिलता है तथा लोग
इस जल से नदाकर अपनी पापों को भी धोते हैं।

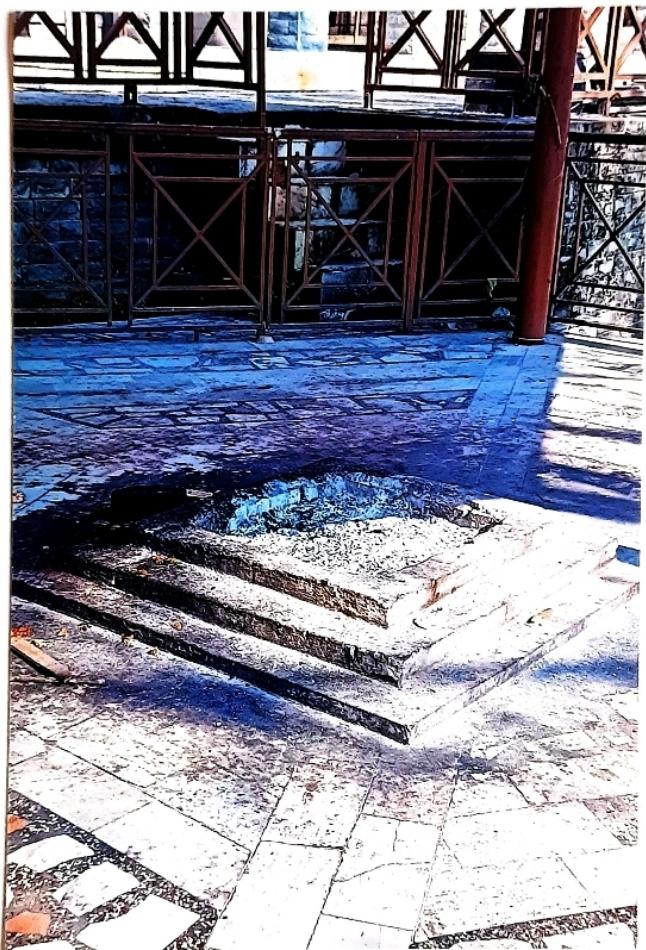
★ घंटियाँ :-



पहुँच मंदिर प्रायः काफी आगे से बढ़ा दूजा है। इस त्रिया पहा घंटियों की संख्या काफी अधिक है, पहा घंटियों की संख्या तमाङ्ग ८० से कमी होती है और उन घंटियों के दर्शन का जप्त दिए गए विषय से है,

पहा घंटि मंदिर की सबसे बड़ी घंटी है। तथा इसका बजन तमाङ्ग २० से ३० किलो की ऊटी दोगा तथा पहा मंदिर से मुख्य दूरी के पास लगाई गई है।

द्वन्द्व



पहले चित्र द्वन्द्व कुंड का है। द्वन्द्व कुंड मारकण्डेश्वर
भगवान के शरण में बनाया गया है। इस द्वन्द्व कुंड में
षट्कृत लोग द्वन्द्व करते हैं। जब कोटीना वायरस आया था
तब लोगों ने इस वायरस से बचने के लिए पहां द्वन्द्व
कराया था। इस द्वन्द्व में लगभग सभी जुखाता थीं कि लोग
शाविष भी थे।

प्रमुख उत्सव व रथोदार-ः

वैष्णवी व मार्कंड मैर वा लौक के मूल्य उत्तम व रथोदार है। इस दिन लग्जी श्रवणी भवान मार्कंडीय मंदिर के प्राकृतिक जहर से स्नान करने आते हैं। मार्कंडीय मेर रथोदारे बाली गोंगी का यद मानना है कि अगवान शिव और दूर सात किसी के किसी लप मे स्नान करने के लिए आते हैं। १३ मार्गीर ते यद मैना अक्ष अक्ष दो जला है तथा ५-६ दिन चतुर्वेदी इस मैले की वैष्णवी का ग्रन्ता भी कहा जाता है। इस के अतिरिक्त मैले मे बहुत से देवी-देवता और इस मैले की थोंगा बढ़ाते हैं।

पूजा अर्चना-ः

इस मंदिर मे दिन दो बार पूजा की जाती है। शाम के समय मे भी पूजा की जाती है। इस पूजा मे का दूल और घंटिया बजाती है। इस पूजा मे गाव के लाल पास के गोग पूजा करने के लिए आते हैं। पूजा का समय
 सुबहः ०५:०० बजे श्रूति ०६:०० बजे
 रातः ०८:०० बजे व शारदीये ०७:०० बजे

मंदिर के खुलने तथा बंद होने का समय-ः

सर्वियो मे मंदिर छवद उबजे तथा बंद शाम की ४ बजे तथा रामियो मे छवद उबजे तथा बंद १ बजे होता है।

लक्षण और उद्देश्य :-

इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य बुखारा की स्थानीय ही दैवी वृक्षों के मंदिरों की स्थितिकृपुण की की जानना तथा उनका संरक्षण करना है।

प्रमुख प्रविधि :-

इस प्रोजेक्ट में हमें बुखारा की स्थानीय साथार पर विभिन्न तीरों की तथा मंदिरों की कार्य करतीजों से मिलकर उनसे प्रश्न पूछकर मंदिरों की स्थितिकृपुण की गई में प्रायगिक आकड़ों की स्थिति किया गया है।

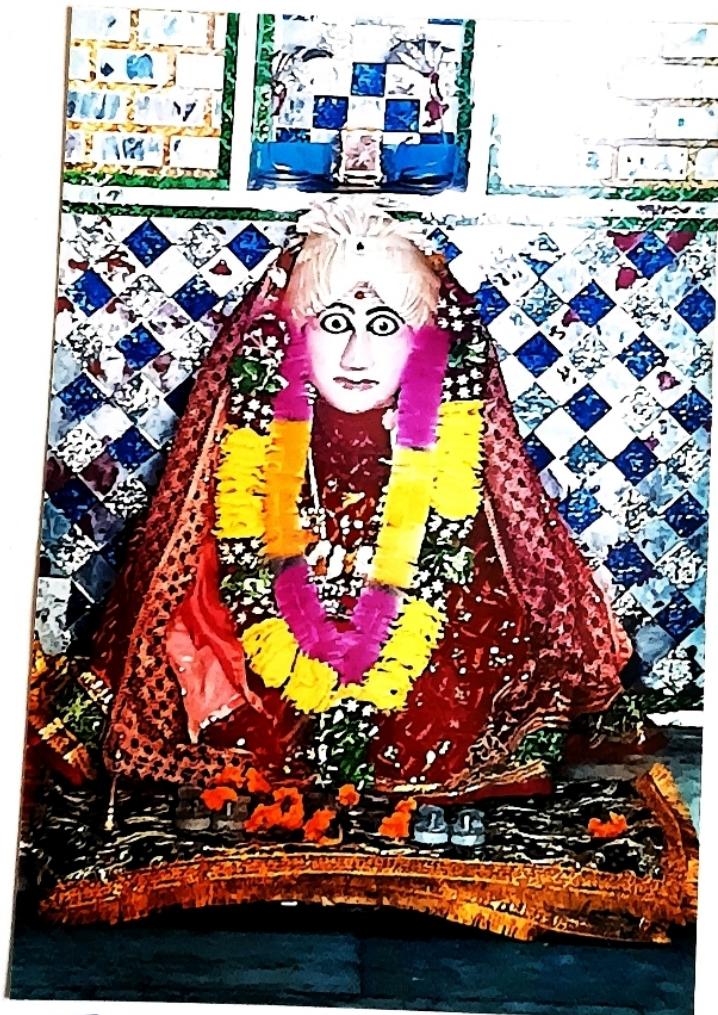
इसके अन्तर्गत मंदिरों में बाहर मंदिर में स्थितिकृपुणों को देखा तथा मंदिरों के गवर्नरों के काह लदायी गए हैं एवं उनके छंदों में बानकरी प्राप्त की गयी है।

विस्तृत विवरण :-

इस प्रोजेक्ट रिपोर्ट की बुखारा की मंदिरों की स्थितिकृपुण तथा संरक्षण जानकारी प्राप्त करने के लिए यह किया गया है।

मार्कंडेय जी की मृत्यु मृति:-

यह मृति प्रथमि मार्कंडेय जी की मृत्यु मृति है यहा
पर पुनाधि जीवित है। ये दर्शकों के / अन्तर्गती के
मार्कंडेय जी का आश्चर्यगाढ़ लिंग की उत्तमता की है तथा
प्रथमि मार्कंडेय के बारे में बताते हैं। यह मार्कंडेय जी की
मृति गुरुर्वाच २० फीट ऊँची। यह मृति दूरियाण में बनाई
गई है।



[प्रथमि मार्कंडेय जी]]

निष्कर्ष

Conclusion इस (Project report) में मैंने सप्तवीं साल-
- पास के ग्रन्थों को बहुत गढ़ाई में जाना।
अतः मैं, मैं इस [“Historical Background of temples
of Tukhala”] परियोजना को करते हुए मैंने
जो मनौकर लिए हैं, मैं इस मनौकरी की विषयी
साथ तांडा करना पाएता हूँ। मैंने कि गदा विषयी
के बारे में तारीखें बहुत बातें सीखी। यहाँ सबसे
बात, जो कि मैं आपके साथ तांडा करना पाएता हूँ
वह है कि मैंने इस विषय में अधिक ज्ञान
निकाला की,

इस परियोजना में मैं “श्री
(Geographical) विषय की कानूनीकृत जानकारी प्रदान की
हूँ। दूसरी तरफ इस छलांग के लक्षण नियारित करने के
लिए दूसरी सूचियाँ कि श्री “शुदामा राम” जी के
बहुत विशेष धन्यवाद। मैंने इस परियोजना में करनी
वाली हर एक कार्य का जानकार लिया,

षट्प्रवाद।